Baglamukhi Chalisa Lyrics with Meaning in Hindi and English

Baglamukhi Chalisa Lyrics in Hindi

॥ दोहा ॥
सिर नवाइ बगलामुखी, लिखूं चालीसा आज ॥
कृपा करहु मोपर सदा, पूरन हो मम काज ॥

॥ चौपाई ॥
जय जय जय श्री बगला माता । आदिशक्ति सब जग की त्राता ॥

बगला सम तब आनन माता । एहि ते भयउ नाम विख्याता ॥

शशि ललाट कुण्डल छवि न्यारी । असतुति करहिं देव नर-नारी ॥

पीतवसन तन पर तव राजै । हाथहिं मुद्गर गदा विराजै ॥

तीन नयन गल चम्पक माला । अमित तेज प्रकटत है भाला ॥

रत्न-जटित सिंहासन सोहै । शोभा निरखि सकल जन मोहै ॥

आसन पीतवर्ण महारानी । भक्तन की तुम हो वरदानी ॥

पीताभूषण पीतहिं चन्दन । सुर नर नाग करत सब वन्दन ॥

एहि विधि ध्यान हृदय में राखै । वेद पुराण संत अस भाखै ॥

अब पूजा विधि करौं प्रकाशा । जाके किये होत दुख-नाशा ॥

प्रथमहिं पीत ध्वजा फहरावै । पीतवसन देवी पहिरावै ॥

कुंकुम अक्षत मोदक बेसन । अबिर गुलाल सुपारी चन्दन ॥

माल्य हरिद्रा अरु फल पाना । सबहिं चढ़इ धरै उर ध्याना ॥

धूप दीप कर्पूर की बाती । प्रेम-सहित तब करै आरती ॥

अस्तुति करै हाथ दोउ जोरे । पुरवहु मातु मनोरथ मोरे ॥

मातु भगति तब सब सुख खानी । करहुं कृपा मोपर जनजानी ॥

त्रिविध ताप सब दुख नशावहु । तिमिर मिटाकर ज्ञान बढ़ावहु ॥

बार-बार मैं बिनवहुं तोहीं । अविरल भगति ज्ञान दो मोहीं ॥

पूजनांत में हवन करावै । सा नर मनवांछित फल पावै ॥

सर्षप होम करै जो कोई । ताके वश सचराचर होई ॥

तिल तण्डुल संग क्षीर मिरावै । भक्ति प्रेम से हवन करावै ॥

दुख दरिद्र व्यापै नहिं सोई । निश्चय सुख-सम्पत्ति सब होई ॥

फूल अशोक हवन जो करई । ताके गृह सुख-सम्पत्ति भरई ॥

फल सेमर का होम करीजै । निश्चय वाको रिपु सब छीजै ॥

गुग्गुल घृत होमै जो कोई । तेहि के वश में राजा होई ॥

गुग्गुल तिल संग होम करावै । ताको सकल बंध कट जावै ॥

बीलाक्षर का पाठ जो करहीं । बीज मंत्र तुम्हरो उच्चरहीं ॥

एक मास निशि जो कर जापा । तेहि कर मिटत सकल संतापा ॥

घर की शुद्ध भूमि जहं होई । साध्का जाप करै तहं सोई ॥

सेइ इच्छित फल निश्चय पावै । यामै नहिं कदु संशय लावै ॥

अथवा तीर नदी के जाई । साधक जाप करै मन लाई ॥

दस सहस्र जप करै जो कोई । सक काज तेहि कर सिधि होई ॥

जाप करै जो लक्षहिं बारा । ताकर होय सुयशविस्तारा ॥

जो तव नाम जपै मन लाई । अल्पकाल महं रिपुहिं नसाई ॥

सप्तरात्रि जो पापहिं नामा । वाको पूरन हो सब कामा ॥

नव दिन जाप करे जो कोई । व्याधि रहित ताकर तन होई ॥

ध्यान करै जो बन्ध्या नारी । पावै पुत्रादिक फल चारी ॥

प्रातः सायं अरु मध्याना । धरे ध्यान होवैकल्याना ॥

कहं लगि महिमा कहौं तिहारी । नाम सदा शुभ मंगलकारी ॥

पाठ करै जो नित्या चालीसा । तेहि पर कृपा करहिं गौरीशा ॥

॥ दोहा ॥
सन्तशरण को तनय हूं, कुलपति मिश्र सुनाम ।
हरिद्वार मण्डल बसूं , धाम हरिपुर ग्राम ॥

उन्नीस सौ पिचानबे सन् की, श्रावण शुक्ला मास ।
चालीसा रचना कियौ, तव चरणन को दास ॥

Baglamukhi Chalisa Meaning in Hindi

॥ दोहा ॥
सिर नवाइ बगलामुखी, लिखूं चालीसा आज ॥

- सिर झुकाकर माँ बगलामुखी का वंदन करते हुए मैं आज चालीसा का लेखन कर रहा हूँ।

कृपा करहु मोपर सदा, पूरन हो मम काज ॥

- हे माँ ! मुझ पर अपनी सदा कृपा बनाए रखें ताकि मेरे सभी कार्य पूर्ण हो सकें।

॥ चौपाई ॥
जय जय जय श्री बगला माता। आदिशक्ति सब जग की त्राता॥

- जय हो, जय हो, हे माँ बगलामुखी ! आप आदि शक्ति हैं और संपूर्ण संसार की रक्षक हैं।

बगला सम तब आनन माता। एहि ते भयउ नाम विख्याता॥

- आपके मुख का स्वरूप बगुले जैसा है, इसी कारण आपका नाम "बगलामुखी" प्रसिद्ध हुआ।

शशि ललाट कुण्डल छवि न्यारी। असतुति करहिं देव नर-नारी॥

- आपके मस्तक पर चंद्रमा शोभायमान है और कानों में कुंडल सुशोभित हैं। देवता, मनुष्य और स्त्रियाँ आपकी स्तुति करते हैं।

पीतवसन तन पर तव राजै। हाथहिं मुद्गर गदा विराजै॥

- आपके शरीर पर पीले वस्त्र सुशोभित हैं और आपके हाथों में मुद्गर और गदा शोभित हो रहे हैं।

तीन नयन गल चम्पक माला। अमित तेज प्रकटत है भाला॥

- आपके तीन नेत्र हैं और गले में चंपा के फूलों की माला है। आपके मुखमंडल से अपार तेज प्रकट हो रहा है।

रत्न-जटित सिंहासन सोहै। शोभा निरखि सकल जन मोहै॥

- रत्नों से जटित सिंहासन पर आप विराजमान हैं। आपकी इस दिव्य शोभा को देखकर सभी लोग मोहित हो जाते हैं।

आसन पीतवर्ण महारानी। भक्तन की तुम हो वरदानी॥

- हे महारानी! आपका आसन पीले रंग का है और आप अपने भक्तों को वरदान देने वाली देवी हैं।

पीताभूषण पीतहिं चन्दन। सुर नर नाग करत सब वन्दन॥

- आपके आभूषण और शरीर पर पीला चंदन है। देवता, मनुष्य और नागराज सभी आपकी वंदना करते हैं।

एहि विधि ध्यान हृदय में राखै। वेद पुराण संत अस भाखै॥

- जो इस प्रकार आपके दिव्य स्वरूप का ध्यान करता है, वेद, पुराण और संत उसकी महिमा का वर्णन करते हैं।

अब पूजा विधि करौं प्रकाशा। जाके किये होत दुख-नाशा॥

- अब मैं आपकी पूजा-विधि का वर्णन कर रहा हूँ, जिससे सभी प्रकार के दुखों का नाश होता है।

प्रथमहिं पीत ध्वजा फहरावै। पीतवसन देवी पहिरावै॥

- सबसे पहले माँ को पीले रंग की ध्वजा चढ़ाएं और उन्हें पीले वस्त्र पहनाएं।

कुंकुम अक्षत मोदक बेसन। अबिर गुलाल सुपारी चन्दन॥

- कुमकुम, अक्षत (चावल), मोदक, बेसन के लड्डू, अबीर, गुलाल, सुपारी और चंदन चढ़ाएं।

माल्य हरिद्रा अरु फल पाना। सबहिं चढ़इ धरै उर ध्याना॥

- हल्दी की माला, फल और पान चढ़ाकर भक्त मन में माँ का ध्यान करें।

धूप दीप कर्पूर की बाती। प्रेम-सहित तब करै आरती॥

- धूप, दीप और कपूर से बनी बाती के साथ प्रेमपूर्वक माँ की आरती करें।

अस्तुति करै हाथ दोउ जोरे। पुरवहु मातु मनोरथ मोरे॥

- दोनों हाथ जोड़कर आपकी स्तुति करें और अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति की प्रार्थना करें।

मातु भगति तब सब सुख खानी। करहुं कृपा मोपर जनजानी॥

- हे माँ! आपकी भक्ति ही सभी सुखों का स्रोत है। कृपया मुझ पर कृपा करें और मुझे अपना भक्त जानें।

त्रिविध ताप सब दुख नशावहु। तिमिर मिटाकर ज्ञान बढ़ावहु॥

- कृपया मेरे तीनों प्रकार के कष्टों (शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक) को नष्ट करें और अज्ञान के अंधकार को मिटाकर मुझे ज्ञान प्रदान करें।

बार-बार मैं बिनवहुं तोहीं। अविरल भगति ज्ञान दो मोहीं॥

- मैं बार-बार आपके सामने प्रार्थना करता हूँ। मुझे निरंतर आपकी भक्ति और ज्ञान प्रदान करें।

पूजनांत में हवन करावै। सा नर मनवांछित फल पावै॥

- जो व्यक्ति पूजा के अंत में हवन करता है, वह अपनी सभी इच्छाओं को पूरा करता है।

सर्षप होम करै जो कोई। ताके वश सचराचर होई॥

- जो व्यक्ति सरसों से हवन करता है, उसके वश में समस्त चराचर जगत (जड़-चेतन) आ जाता है।

तिल तण्डुल संग क्षीर मिरावै। भक्ति प्रेम से हवन करावै॥

- जो व्यक्ति तिल, चावल और दूध मिलाकर प्रेम और भक्ति के साथ हवन करता है, उसके सभी कष्ट दूर हो जाते हैं।

दुख दरिद्र व्यापै नहिं सोई। निश्चय सुख-सम्पत्ति सब होई॥

- ऐसे व्यक्ति के पास न तो दुख और न ही दरिद्रता आती है। वह निश्चित रूप से सुख-सम्पत्ति प्राप्त करता है।

फूल अशोक हवन जो करई। ताके गृह सुख-सम्पत्ति भरई॥

- जो व्यक्ति अशोक के फूलों से हवन करता है, उसके घर में सुख और संपत्ति हमेशा बनी रहती है।

फल सेमर का होम करीजै। निश्चय वाको रिपु सब छीजै॥

- सेमल के फल से हवन करने पर उसके सभी शत्रु निश्चित रूप से नष्ट हो जाते हैं।

गुग्गुल घृत होमै जो कोई। तेहि के वश में राजा होई॥

- जो व्यक्ति गुग्गुल (गंधराल) और घी से हवन करता है, वह राजा (शासन) को भी अपने वश में कर सकता है।

गुग्गुल तिल संग होम करावै। ताको सकल बंध कट जावै॥

- जो व्यक्ति गुग्गुल और तिल के साथ हवन करता है, उसके सभी प्रकार के बंधन (बाधाएं) समाप्त हो जाते हैं।

बीलाक्षर का पाठ जो करहीं। बीज मंत्र तुम्हरो उच्चरहीं॥

- जो व्यक्ति आपकी बीज मंत्रों के साथ बीलाक्षर (विशेष मंत्र) का पाठ करता है, उसे विशेष सिद्धियां प्राप्त होती हैं।

एक मास निशि जो कर जापा। तेहि कर मिटत सकल संतापा॥

- जो व्यक्ति एक महीने तक रात्रि में नियमित रूप से जप करता है, उसके सभी कष्ट समाप्त हो जाते हैं।

घर की शुद्ध भूमि जहं होई। साधका जाप करै तहं सोई॥

- जहाँ घर में पवित्र भूमि हो, साधक को वहीं बैठकर जप करना चाहिए।

सेइ इच्छित फल निश्चय पावै। यामै नहिं कदु संशय लावै॥

- वह साधक अपनी इच्छित फल को अवश्य प्राप्त करता है। इसमें कोई संदेह नहीं है।

अथवा तीर नदी के जाई। साधक जाप करै मन लाई॥

- या फिर साधक नदी के तट पर जाकर, मन को एकाग्र करके जप करे।

दस सहस्र जप करै जो कोई। सक काज तेहि कर सिधि होई॥

- जो दस हजार बार जप करता है, उसके सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं।

जाप करै जो लक्षहिं बारा। ताकर होय सुयशविस्तारा॥

- जो व्यक्ति एक लाख बार जप करता है, उसका यश पूरे संसार में फैल जाता है।

जो तव नाम जपै मन लाई। अल्पकाल महं रिपुहिं नसाई॥

- जो मन लगाकर आपका नाम जपता है, उसके शत्रु बहुत ही कम समय में नष्ट हो जाते हैं।

सप्तरात्रि जो पापहिं नामा। वाको पूरन हो सब कामा॥

- जो व्यक्ति सात रातों तक लगातार जप करता है, उसकी सभी मनोकामनाएं पूरी हो जाती हैं।

नव दिन जाप करे जो कोई। व्याधि रहित ताकर तन होई॥

- जो व्यक्ति नौ दिनों तक जप करता है, उसका शरीर सभी रोगों से मुक्त हो जाता है।

ध्यान करै जो बन्ध्या नारी। पावै पुत्रादिक फल चारी॥

- जो संतानहीन स्त्री आपका ध्यान करती है, उसे संतान सुख प्राप्त होता है।

प्रातः सायं अरु मध्याना। धरे ध्यान होवैकल्याना॥

- जो प्रातः, सायं और दोपहर में आपका ध्यान करता है, वह कल्याण प्राप्त करता है।

कहं लगि महिमा कहौं तिहारी। नाम सदा शुभ मंगलकारी॥

- आपकी महिमा का मैं किस प्रकार वर्णन करूं? आपका नाम सदा शुभ और मंगलकारी है।

पाठ करै जो नित्या चालीसा। तेहि पर कृपा करहिं गौरीशा॥

- जो व्यक्ति नियमित रूप से आपकी चालीसा का पाठ करता है, उस पर माता गौरी की कृपा सदा बनी रहती है।

॥ दोहा ॥
सन्तशरण को तनय हूं, कुलपति मिश्र सुनाम ॥

- मैं संतों की शरण में रहने वाला व्यक्ति हूं, मेरा नाम कुलपति मिश्र है।

हरिद्वार मण्डल बसूं, धाम हरिपुर ग्राम ॥

- मैं हरिद्वार मंडल के हरिपुर गाँव में निवास करता हूँ।

उन्नीस सौ पिचानबे सन् की, श्रावण शुक्ला मास ॥

- यह चालीसा संवत 1995 के श्रावण शुक्ल पक्ष में लिखी गई थी।

चालीसा रचना कियौ, तव चरणन को दास ॥

- यह चालीसा मैंने आपके चरणों की सेवा में रचाई है, हे माँ बगलामुखी !

Baglamukhi Chalisa Lyrics in English

□ Doha □
Sir navaai Baglamukhi, likhoon Chalisa aaj □
Kripa karahu mopar sada, poorn ho mam kaaj □

□ Chaupai □
Jai Jai Jai Shri Bagla Mata □ Adishakti sab jag ki trata □
Bagla sam tab aanan mata □ Ehi te bhayau naam vikhyata □

Shashi lalat kundal chhavi nyaari □ Asatuti karahin dev nar-naari □
Peetavasan tan par tav raajai □ Haathahin mudgar gada virajai □

Teen nayan gal champak maala □ Amit tej prakatat hai bhaala □
Ratn-jatit sinhasan sohai □ Shobha nirkhi sakal jan mohai □

Aasan peetavarn Maharani □ Bhaktan ki tum ho varadani □
Peetabhushan peetahin chandan □ Sur nar naag karat sab vandan □

Ehi vidhi dhyan hriday mein raakhe □ Ved puraan sant as bhaakhe □
Ab pooja vidhi karau prakaasha □ Jaake kiye hot dukh-naasha □

Prathmahin peet dhwaja phaharaavai □ Peetavasan devi pahiraavai □
Kunkum akshat modak besan □ Abir gulaal supari chandan □

Maalya haridra aru phal paana □ Sabahin chadhai dharai ur dhyana □
Dhoop deep karpoor ki baati □ Prem-sahit tab karai aarati □

Astuti karai haath dou jore □ Puravahu maatu manorath more □
Maatu bhagati tab sab sukh khaani □ Karahun kripa mopar janjaani □

Trividha taap sab dukh nashaavahu □ Timir mitaakar gyaan badhaavahu □
Baar-baar main binavahun tohi □ Aviral bhagati gyaan do mohi □

Poojanant mein havan karaavai □ Saa nar manvaanchhit phal paavai □
Sarshap hom karai jo koi □ Taake vash sacharachar hoi □

Til tandul sang ksheer miraavai □ Bhakti prem se havan karaavai □
Dukh daridr vyaapai nahin soi □ Nishchay sukh-sampatti sab hoi □

Phool ashoka havan jo karai Taake grih sukh-sampatti bharai
Phal semar ka hom kareejai Nishchay vaako ripu sab chheejai

Guggul ghrit homai jo koi Tehi ke vash mein raja hoi
Guggul til sang hom karaavai Taako sakal bandh kat jaavai

Beelakshar ka paath jo karahin Beej mantra tumharo uchcharahin
Ek maas nishi jo kar jaapa Tehi kar mitat sakal santapa

Ghar ki shuddh bhoomi jahan hoi Saadhka jaap karai tahin soi
Sei ichchhit phal nischay paavai Yaamai nahin kadu sanshay laavai

Athvaa teer nadi ke jaai Saadhak jaap karai man laai
Das sahasr jaap karai jo koi Sak kaaj tehi kar sidh hoi

Jaap karai jo lakshahin baara Taakar hoi suyash vistara
Jo tav naam japai man laai Alpakaal mah ripuhin nasai

Saptaratr jo paapahin naama Vaako poorn ho sab kaama
Nav din jaap kare jo koi Vyadhi rahit taakaar tan hoi

Dhyaan karai jo bandhya naari Paavai putraadik phal chaari
Praatah saayam aru madhyaana Dhare dhyaan hovaikalyana

Kahaan lagi mahima kahun tihari Naam sada shubh mangalkari
Paath karai jo nitya Chalisa Tehi par kripa karahin Gaurisha

 Doha
Santasharan ko tanay hoon, Kulapati Mishra sunaam
Haridwar mandal basoon, dhaam Haripur graam

Unnis sau pichaanbe san ki, shraavan shuklaa maas
Chalisa rachana kiyao, tav charanan ko daas

Baglamukhi Chalisa Meaning in English

** Doha **
**Sir navaai Baglamukhi, likhoon Chalisa aaj **

- Bowing my head to Mother Baglamukhi, I begin to write this Chalisa today.

**Kripa karahu mopar sada, poorn ho mam kaaj **

- Please shower your blessings upon me always, so that all my tasks may be fulfilled.

** Chaupai **

**Jai Jai Jai Shri Bagla Mata Adishakti sab jag ki trata **

- Glory to you, O Mother Baglamukhi! You are the supreme power and protector of the entire world.

**Bagla sam tab aanan mata Ehi te bhayau naam vikhyata **

- Your face resembles that of a heron, which is why you are renowned as Baglamukhi.

**Shashi lalat kundal chhavi nyaari Asatuti karahin dev nar-naari **

- The moon adorns your forehead, and your earrings shine with unique beauty. Gods, humans, and women sing your praises.

**Peetavasan tan par tav raajai Haathahin mudgar gada virajai **

- You wear a yellow garment, and in your hands, a mace and club are splendidly held.

**Teen nayan gal champak maala Amit tej prakatat hai bhaala **

- You have three eyes and wear a garland of champak flowers. Your face radiates immense brilliance.

**Ratn-jatit sinhasan sohai Shobha nirkhi sakal jan mohai **

- You sit on a throne adorned with gems, and your divine splendor enchants all who behold you.

**Aasan peetavarn Maharani Bhaktan ki tum ho varadani **

- O Queen seated on a yellow throne! You are the bestower of boons upon your devotees.

Peetabhushan peetahin chandan ▯ Sur nar naag karat sab vandan ▯

- You are adorned with yellow ornaments and sandalwood paste. Deities, humans, and serpent kings all offer you reverence.

Ehi vidhi dhyan hriday mein raakhe ▯ Ved puraan sant as bhaakhe ▯

- Those who meditate on you in this form, as described by the Vedas, Puranas, and saints, achieve blessings.

Ab pooja vidhi karau prakaasha ▯ Jaake kiye hot dukh-naasha ▯

- Now, I describe the method of your worship, which removes all sorrows.

Prathmahin peet dhwaja phaharaavai ▯ Peetavasan devi pahiraavai ▯

- First, a yellow flag is hoisted, and the goddess is adorned with yellow attire.

Kunkum akshat modak besan ▯ Abir gulaal supari chandan ▯

- Offer kumkum, rice, modak (sweet), besan sweets, abir, gulal, betel nuts, and sandalwood paste.

Maalya haridra aru phal paana ▯ Sabahin chadhai dharai ur dhyana ▯

- Present garlands, turmeric, fruits, and betel leaves while keeping divine meditation in your heart.

Dhoop deep karpoor ki baati ▯ Prem-sahit tab karai aarati ▯

- Light incense, a lamp with camphor wicks, and perform the aarti with love and devotion.

**Astuti karai haath dou jore Puravahu maatu manorath more **

- With folded hands, offer praises and pray to fulfill all your desires.

**Maatu bhagati tab sab sukh khaani Karahun kripa mopar janjaani **

- O Mother! Your devotion is the source of all happiness. Please bless me, recognizing me as your devotee.

**Trividha taap sab dukh nashaavahu Timir mitaakar gyaan badhaavahu **

- Remove all three types of suffering and ignorance, and grant the light of knowledge.

**Baar-baar main binavahun tohi Aviral bhagati gyaan do mohi **

- I repeatedly plead before you, Mother. Grant me unwavering devotion and knowledge.

**Poojanant mein havan karaavai Saa nar manvaanchhit phal paavai **

- At the end of the worship, if one performs a fire offering (havan), they receive their desired fruits.

**Sarshap hom karai jo koi Taake vash sacharachar hoi **

- Whoever offers mustard seeds in the havan can control all animate and inanimate beings.

**Til tandul sang ksheer miraavai Bhakti prem se havan karaavai **

- Offering sesame, rice, and milk with devotion during the havan brings divine blessings.

Dukh daridr vyaapai nahin soi ▯ Nishchay sukh-sampatti sab hoi ▯

- Such a person is free from suffering and poverty, and prosperity certainly follows.

Phool ashoka havan jo karai ▯ Taake grih sukh-sampatti bharai ▯

- Offering ashoka flowers in the havan fills the house with happiness and prosperity.

Phal semar ka hom kareejai ▯ Nishchay vaako ripu sab chheejai ▯

- Offering semar fruits in the havan destroys all enemies.

Guggul ghrit homai jo koi ▯ Tehi ke vash mein raja hoi ▯

- Those who offer guggul and ghee in the havan gain control over kings.

Guggul til sang hom karaavai ▯ Taako sakal bandh kat jaavai ▯

- Offering guggul and sesame together removes all obstacles and bondage.

Beelakshar ka paath jo karahin ▯ Beej mantra tumharo uchcharahin ▯

- Reciting your sacred Beelakshar verses along with your beej mantra grants immense power.

Ek maas nishi jo kar jaapa ▯ Tehi kar mitat sakal santapa ▯

- Continuous chanting for a month during the night eradicates all suffering.

Ghar ki shuddh bhoomi jahan hoi ▯ Saadhka jaap karai tahin soi ▯

- The practitioner should perform chanting (jaap) on purified ground, as it brings great benefits.

Sei ichchhit phal nischay paavai □ Yaamai nahin kadu sanshay laavai □

- They will surely receive their desired results without any doubt.

Athvaa teer nadi ke jaai □ Saadhak jaap karai man laai □

- Alternatively, the practitioner may go to the bank of a river and focus their mind on chanting.

Das sahasr jaap karai jo koi □ Sak kaaj tehi kar sidh hoi □

- Whoever chants ten thousand times will achieve success in all their endeavors.

Jaap karai jo lakshahin baara □ Taakar hoi suyash vistara □

- If someone chants one lakh times, their fame and glory spread far and wide.

Jo tav naam japai man laai □ Alpakaal mah ripuhin nasai □

- Chanting your name with concentration destroys all enemies within a short time.

Saptaratr jo paapahin naama □ Vaako poorn ho sab kaama □

- Chanting your name continuously for seven nights fulfills all desires.

Nav din jaap kare jo koi □ Vyadhi rahit taakaar tan hoi □

- A person who chants for nine days becomes free from all ailments.

Dhyaan karai jo bandhya naari □ Paavai putraadik phal chaari □

- A childless woman who meditates upon you will be blessed with children and other fruits of joy.

Praatah saayam aru madhyaana □ Dhare dhyaan hovaikalyana □

- Meditating on you in the morning, evening, and noon leads to overall well-being.

Kahaan lagi mahima kahun tihari □ Naam sada shubh mangalkari □

- How far can I describe your greatness? Your name is always auspicious and brings well-being.

Paath karai jo nitya Chalisa □ Tehi par kripa karahin Gaurisha □

- Those who regularly recite this Chalisa receive the grace of Goddess Gauri.

□ Doha □
Santasharan ko tanay hoon, Kulapati Mishra sunaam □

- I am the son of Santasharan, known by the name Kulapati Mishra.

Haridwar mandal basoon, dhaam Haripur graam □

- I reside in the Haripur village within the Haridwar region.

Unnis sau pichaanbe san ki, shraavan shuklaa maas □

- This Chalisa was composed in the year 1995, during the month of Shravan Shukla Paksha.

Chalisa rachana kiyao, tav charanan ko daas □

- I have created this Chalisa in dedication to your divine feet, O Mother Baglamukhi!